कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नही लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

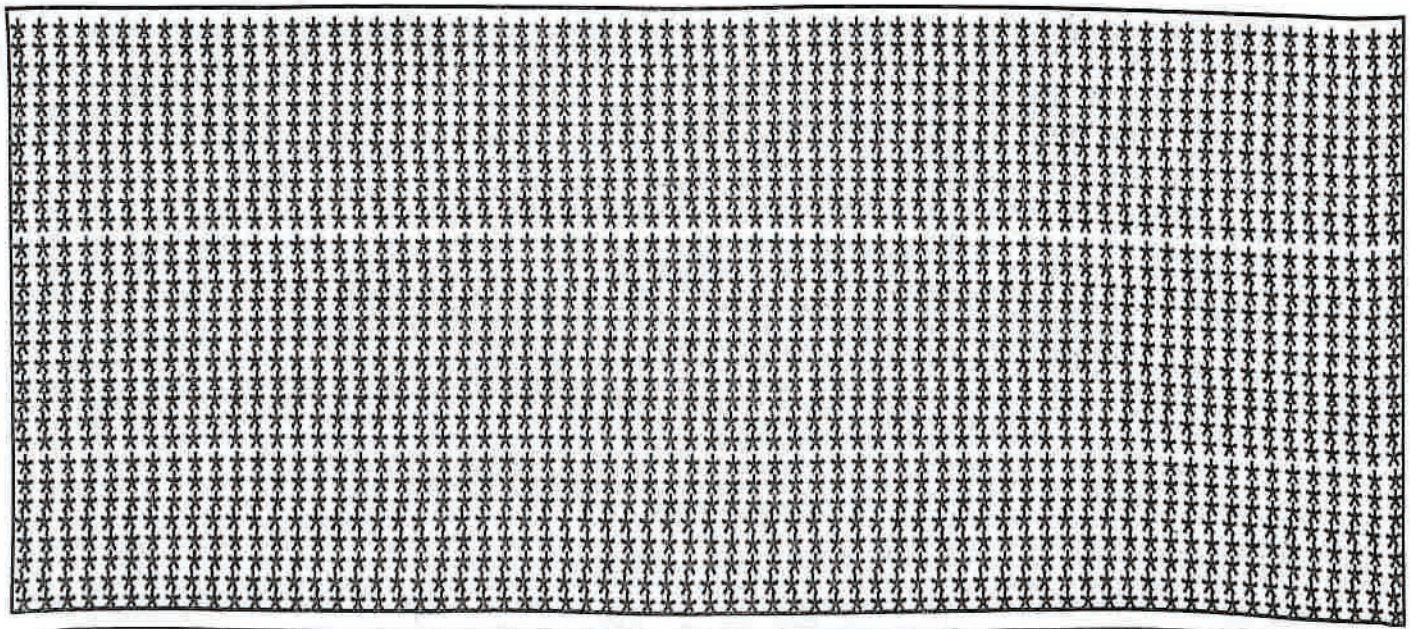

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5. (i) सर्वदमनस्य मणिबन्धे रक्षाकरण्डकम् आबद्धम् आसीत् ।

(ii) कस्तूरी मृगात् जायते ।

(iii) पञ्चतन्त्रस्य रचना विष्णुशर्मना कृता ।

(v) अस्माभिः यानि अद्यवा अनवद्यानि तानि कर्माणि सेवितव्यानि ।

(vi) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे प्राणिनः तुष्यन्ति ।

(viii) काव्येषु नाटकं रम्यम् उच्यते ।

6. ततस्तं किं भूत्वा दशति ?

7. भवान् किं वदति ?

8. कस्य सदा विजय एव भविष्यति ?

9. मेघान् कुत्र अवलोक्य नन्दामि ?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

10. (i) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

(ii) प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥

12. (i) महा + ऋषिः (गुण स्वर संधि)
(ii) शिवः + अहम् (उत्व विसर्ग संधि)

13. (i) गायकः (अयादि स्वर संधि)
(ii) शिवश्च (श्चुत्व व्यंजन संधि)

14. (i) विशालभवनं → विशालं च तत् भवनम् (कर्मधारय समास)

(ii) भरतशत्रुघ्नौ → भरतः च शत्रुघ्नः च (द्वन्द्व समास)

(iii) दिनं दिनं प्रति → प्रतिदिनम् (अव्ययीभाव समास)

15. i) द्वितीया विभक्ति
कारण - 'विना' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्ति भवति।

ii) चतुर्थी विभक्ति
कारण - 'नमः' शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्ति भवति।

iii) द्वितीया विभक्ति
कारण - 'उपर्युपरि' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्ति भवति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. i) श्रीधरः धनी आसीत् । (धन + इनि)
ii) शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति । (शिक्षक + टाप्)

17. i) बुद्धिमती - बुद्धि + मतुप् + ङीप्
ii) पार्वती - पर्वत + ङीप्

18. (i) अहं "श्वः" देहलीं गमिष्यामि ।
(ii) तृणानि इतस्ततः विकीर्णानि आसन् ।
(iii) वयम् अद्युनैव कार्यं सम्पादयामः ।

19. जनेन ग्रामः गम्यते ।

20. भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति ।

21. अहं नगरं गच्छामि ।

22. (क) i) महेशः रात्रौ सपाददशवादने शयनं करोति ।
(ख) ii) "शताब्दी" रेलयानं पादोनदशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

23) i) कृषकः प्रातः क्षेत्रं प्रति गच्छति।

ii) हट्टे तिस्रः महिलाः वस्तूनि क्रीणन्ति।

iii) अहं रोटिकां खादामि।

25. महेशः - निरञ्जन! (i) श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते।

निरञ्जनः - अरे (ii) त्वं न जानासि? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

महेशः - अहो! उत्तमः विचारः। सर्वे श्वः (iii) कदा गम्यते?

निरञ्जनः - प्रातः अष्टवादनाद् (iv) आरभ्य कार्यमिदं भविष्यति।

महेशः - पूर्वं कस्य भागस्य (v) स्वच्छता करिष्यते।

निरञ्जनः - (vi) वामतः विद्यमानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

महेशः - तेन तद् रमणीयं (vii) सुन्दरं च भविष्यति।

निरञ्जनः - (viii) नालीनां स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

24.

सुनगरम्
19 मार्च 2019

प्रियमित्र कवीन्द्र!

कुशली सन् कुशलं कामये। मा० शि० बोर्ड परीक्षा (i) सन्निकटे वर्तते। अहं समयसारिणीं (ii) निर्मम्य योजनया अधीयानः अस्मि। अधुना मम (iii) परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति। गुरवः सर्वोत्तमान् अङ्कान् (iv) प्राप्तुं विद्यालये (v) विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति। ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते। भवानपि योजनया एव (vi) अधीयानः स्यातः। गतः (vii) कालः न पुनरायाति, इति सूक्ति (viii) सर्वदा अपि स्मर।

भवन्मित्रम्
नरेन्द्रः

26. (i) महिला कूपात् जलं आनयति।
26. (ii) त्वं अपि गच्छ।

(iv) अहं गणितं विज्ञानं च पाठयामि।

(v) मित्राय दुग्धं रोचते।

~~(vi) अहं विज्ञानं (ज्ञानी) अस्मि।~~

~~(vii) महिला कूपात् जलं नयति।~~

~~(viii) अहं विज्ञानं (ज्ञानी) अस्मि।~~

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

27. (i) पर्वतस्य पृष्ठतः ग्रामः अस्ति।

(ii) ग्रामे सुन्दराणि उपवनानि सन्ति।

(iii) मध्ये च भगवतः शिवस्य देवालयोऽस्ति।

(iv) पर्वतं (iv) निकषा एका नदी प्रवहति।

(v) ग्राम जनाः नद्यां तरन्ति।

(vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव मनोहरः अस्ति।

28. i) एकदा एकः मकरः नद्यां वसति स्म।
iii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत्।
iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म।
iv) मकरः वानरेण पतितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्।
v) "फलानि अतिमधुराणि" अतः वानर हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानर हृदयं खादामि।
vi) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धि चातुर्येण विफलीकृतवान्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1. स्वामिनो जीवनं - - - - - - - - - - - चिकित्सा कारिता

1. प्रसंग :

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'कर्मयोगी स्वामी केशवानन्दः' शीर्षक पाठ से लिया गया है। मूलतः यह पाठ 'डॉ. विक्रमाजीत' द्वारा लिखा गया है। इसमें स्वामी केशवानन्द की शिक्षा व समाज-सेवा के कार्यों का वर्णन किया गया है।

व्याख्या :-

स्वामी केशवानन्द का जीवन 'सर्वधर्म सद्भाव का प्रतीक है। इनका जन्म जाट-जाति में हुआ। लेकिन ये सिक्खों के गुरु नानकदेव के पुत्र श्रीचन्द द्वारा प्रवर्तित 'उदासी सम्प्रदाय' में दीक्षित हुए। इन्होंने गुरुग्रन्थसाहिब का अच्छा अध्ययन किया।

इन्होंने ग्यारह वर्ष की साधना के द्वारा सिक्खों का 700 पृष्ठ का इतिहास लेखन किया। इन्होंने विभाजन के समय हिंसा के कारण पीड़ित मुस्लिम भाईयों की सेवा की

विशेष: (i) यहाँ स्वामी केशवानन्द के समाज-सुधार व लेखन कार्य का वर्णन है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2. परोक्षे ---------- पयोमुखम् ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के 'सुभाषितानि' शीर्षक पाठ से लिया गया है। इसमें कवि द्वारा कुमित्र की पहचान करने व उससे बचने की सलाह दी गई है।

व्याख्या :-

कवि कहता है कि पीठ पीछे कार्य को बिगाड़ने वाले व सामने प्रिय बोलने वाले, जिसके ऊपर-ऊपर (मुख भाग पर) अमृत मिला हो, ऐसे जहर से भरे घड़े के समान मित्र को त्याग देना चाहिए।

अर्थात् कुमित्र से सदैव दूर रहना चाहिए।

विशेष :-

(i) कुमित्र की पहचान बताई गई है व उससे दूर रहने के लिए कहा गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

*कृपया पढ़ कर नम्बर दें :-

3. त्वमसि शरण्या _ _ _ _ _ _ _ _ _ रुचिराभरणा ।

प्रसंग :-

प्रस्तुत पद्यांश: अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दनायाः' 'जय सुरभारति' इति शीर्षकपाठाद् उद्धृत: । मूलतः पाठोऽयं कविपुंगवेन श्री हरिरामाचार्येण विरचितात 'मधुच्छन्दा' शीर्षक ग्रन्थाद् उद्धृत: । प्रस्तुतश्लोके कवि: सरस्वत्याः देव्याः वैशिष्ट्यं वर्णयन् कथयति यत् -

व्याख्या :-

कवि कथयति यत् भवती सर्वजनानां शरणदात्री आश्रयभुता च असि । भवती त्रिषु लोकेषु श्रेष्ठा असि । भवती दैवैः ऋषिभिः च वन्दित चरणयुक्ता असि । भवती नवरसैः माधुर्य दायिनी, कविता द्वारा शब्दायमाना च असि । भवती मन्दहासयुक्ता, छवियुक्ता, आभूषणयुक्ता च असि ।

विशेष: -

(i) अत्र कविना सरस्वत्याः देव्याः वैशिष्ट्यं वर्णयन् अकरोत् ।

(ii) त्वमसि - त्वम् + असि

(iii) सुरमुनिवन्दितचरणा - सुरैः मुनिभिः च वन्दितौ चरणौ यस्या सा (सरस्वती) → (बहुव्रीहि समास

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

4. प्रताप: :- अरि - - - - - - - - - - ...एव भविष्यति।

~~प्रस्तु~~
प्रसंग :-

प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकं पाठ्यपुस्तकस्य 'स्पन्दनायाः' 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति शीर्षक पाठाद् उद्धृतः। मूलतः पाठोऽयं 'श्रीनारायणशास्त्री कांकरेण' विरचितम् अस्ति। अस्मिन् नाट्यांशे प्रतापसरदारयोः मध्ये वार्तालापस्य वर्णनम् अस्ति।

व्याख्या :-

प्रताप :- अरे धिक् माम्। यदि अहं स्वदेशस्य रक्षां कर्तुं न सफलं भवामि। तदा मया अत्र निवासेन किमपि महत्वं न अस्ति। (दीर्घं श्वासं उद्घारयति)

(तदा केचन राजपुत्र-सर्वदारः आगच्छन्ति)

सर्वदार :- (नृपोचितं प्रणामं कृत्वा) विजयतां विजयतां महाराणाः।

प्रताप : - (दीर्घं निःश्वसिति) हा धिक् माम्। भवान् अपि विजयध्वनिं कृत्वा किमर्थं मम लज्जितं करोति, सखा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

सर्वदार: - हे प्राणानाम् स्वामी:! त्वम् अयम किं कथयसि ? त्वम् आत्मधर्माय सर्वं किम अपि अकरोत्। स्वतंत्रतायै सर्वं किम अपि असहत। त्वम् सर्वदा जयः एव भविष्यति।

विशेषः -
(i) सर्वदाराणां प्रतापस्य कृते श्रद्धा प्रकटं अभवत्
(ii) माम - अस्मद् शब्द रुप द्वितीया विभक्ति स
(iii) वदति - वद् धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एकव
(iv) कृत्वा - कृ + क्त्वा

11. (क) परोपकारस्य महत्वं।

(ख) (i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।
(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति
(iii) नदी स्वजलं स्वयं न पिबति।
(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम विद्यते
(v) परेषाम् उपकारः परोपकारः कथ्यते।

(ग) (i) वृक्षाः
(ii) सर्वे
(iii) मातृसमा
(iv) जीवनम्

समाप्त